

शिक्षकों की भूमिकाएँ और जिम्मेदारियाँ

डॉ. सुनील कुमार अग्रहरी

सहायक प्रोफेसर, दिशा - ए रिसोर्स सेंटर फॉर द डिसेबल्ड, जयपुर, राजस्थान

Email - sunil003sun@gmail.com,

सारांश : शिक्षा प्रणाली में सभी स्तरों पर, शिक्षक ही एक होता है, जिसे महत्वपूर्ण कार्य कर्तव्य और जिम्मेदारियाँ सौंपी जाती हैं। उन्हें कई जिम्मेदारियाँ सौंपी गई हैं, जो मुख्य रूप से छात्रों के प्रभावी विकास को बढ़ावा देने, शैक्षणिक लक्ष्यों की प्राप्ति को सुविधाजनक बनाने और शिक्षा की समग्र प्रणाली को उन्नत करने से संबंधित हैं। जब शिक्षकों की नियुक्ति की जाती है, तो कुछ पहलुओं पर ध्यान देने की आवश्यकता होती है। इनमें शैक्षिक योग्यता, अनुभव, दक्षताएं और व्यक्तित्व लक्षण शामिल हैं। इसके अलावा, शिक्षकों में तनाव में काम करने और विभिन्न समस्याओं और चुनौतियों से उचित तरीके से निपटने की क्षमता होनी चाहिए। इन गुणों के साथ, वे अपने कार्य कर्तव्यों को संतोषजनक ढंग से पूरा करने और नौकरी से संतुष्टि प्राप्त करने में सक्षम होंगे। शिक्षकों के लिए अपनी नौकरी बरकरार रखने के लिए अपनी भूमिकाओं और जिम्मेदारियों की पहचान करना महत्वपूर्ण है। समयावधि के भीतर, तकनीकीयों और अन्य आधुनिक और नवीन तरीकों के उपयोग के संदर्भ में जागरूकता पैदा करना आवश्यक है जो कार्यों और गतिविधियों के सफल कार्यान्वयन में सहायता करेगा। अपने कार्य कर्तव्यों को संतोषजनक ढंग से पूरा करने के लिए, उन्हें अपने कौशल और क्षमताओं को निखारने की आवश्यकता है। इस शोध पत्र में जिन मुख्य अवधारणाओं को ध्यान में रखा गया है उनमें शिक्षकों की भूमिकाओं और जिम्मेदारियों का महत्व, शिक्षकों की भूमिकाएँ और शिक्षकों की जिम्मेदारियाँ शामिल हैं।

मुख्य बिन्दु: जिम्मेदारियाँ, भूमिकाएँ, शैक्षणिक अवधारणाएँ, शिक्षा, शिक्षक।

1. प्रस्तावना:

भारत में दुनिया का सबसे बड़ा स्कूलों का तंत्र है। पिछले दशकों के दौरान शिक्षा प्रणाली में जबरदस्त सुधार हुए हैं। शिक्षा प्रणाली को बढ़ाने के लिए शिक्षकों के साथ-साथ प्राचार्यों, निदेशकों और प्रमुखों से नए ज्ञान और कौशल की मांग करना अपरिहार्य है। वे ही ऐसे उपायों, प्रक्रियाओं और नीतियों को तैयार करने में प्रभावी ढंग से योगदान करते हैं जो शिक्षा की समग्र प्रणाली को बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। सूचना और संचार तकनीकी (आईसीटी) तथा ज्ञान क्रांति जैसी तकनीकीयों के आगमन के साथ, शिक्षकों की नौकरी की मांग बढ़ गई है। शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए आईसीटी के लिए नई भूमिकाएँ और जिम्मेदारियाँ लेने के लिए उनकी आवश्यकता है और उन्हें प्रोत्साहित किया जाता है। इसके अलावा, उन्हें शैक्षणिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए शिक्षार्थियों को सहायता और समर्थन प्रदान करने के लिए अपनी क्षमताओं को बढ़ाने की भी आवश्यकता है (रंजन, एन., एवं रहमान, एन., 2019)।

शिक्षकों की भूमिकाएँ और जिम्मेदारियाँ मुख्य रूप से छात्रों को ज्ञान और जानकारी प्रदान करने पर केंद्रित हैं, ताकि वे अपने समग्र जीवन स्तर को समृद्ध कर सकें। वे विद्यार्थियों को नैतिक एवं नीतिपरक इंसान बनाने में योगदान देने के अलावा शिक्षा की समग्र प्रणाली को समृद्ध बनाने में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। एक कुशल शिक्षक को विषयों का पर्याप्त ज्ञान होना आवश्यक है। विषय का ज्ञान होने के अलावा, उन्हें यह सुनिश्चित करना होगा कि वे छात्रों को अवधारणाओं की कुशल समझ हासिल करने में सक्षम बनाएं। साथ ही, उनमें विषय सामग्री को तार्किक एवं व्यवस्थित ढंग से प्रस्तुत करने की दक्षता और क्षमताएं होनी चाहिए। इनमें से एक महत्वपूर्ण पहलू कक्षा नियंत्रण है। कक्षा नियंत्रण तभी उचित तरीके से हो सकता है जब शिक्षक और शिक्षार्थी में आपसी समझ विकसित हो और वे शिक्षार्थी को प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित करें (पुष्कर, पी. 2015)। इसलिए, शिक्षकों की भूमिकाएँ और जिम्मेदारियाँ मुख्य रूप से एक अनुकूल वातावरण बनाने पर केंद्रित होती हैं जिसमें छात्र सीखने के लिए प्रेरित महसूस करते हैं।

2. शिक्षकों की भूमिकाओं और जिम्मेदारियों का महत्व :

न केवल भारत में, बल्कि दुनिया के अन्य देशों में भी शिक्षकों को सामुदायिक कल्याण, आर्थिक विकास और राष्ट्र निर्माण को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण योगदानकर्ता माना जाता है। वे निरंतर सीखने में लगे रहते हैं। वे अपनी शैक्षणिक क्षमताओं, कौशल और दक्षताओं को बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित करते हैं ताकि वे इसे छात्रों को प्रदान कर सकें और उनमें परिश्रम, संसाधनशीलता और

कर्तव्यनिष्ठा के गुण पैदा कर सकें। शिक्षकों की भूमिकाओं और जिम्मेदारियों के संदर्भ में महत्व मुख्य रूप से संसाधनों के कुशल उपयोग के माध्यम से छात्रों की शिक्षा की योजना, वितरण, मूल्यांकन और सुधार के नेतृत्व और प्रबंधन में पहचाना जाता है (भूमिकाएं और जिम्मेदारियां शिक्षण सेवा, 2017)। शिक्षकों को यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि वे बुद्धिमानीपूर्ण निर्णय लें, जो सदस्यों के साथ-साथ शैक्षणिक संस्थानों के लिए भी फायदेमंद साबित हो सकते हैं।

प्रमुख शिक्षकों की भूमिका शिक्षण कार्यबल के कौशल, दक्षता और प्रदर्शन में सुधार करके, अपने कार्य कर्तव्यों को कुशलतापूर्वक पूरा करना है। आमतौर पर, प्रमुख शिक्षक शिक्षण और सीखने में सुधार के लिए कई स्टाफ सदस्यों के समन्वय के लिए जिम्मेदार होते हैं, जिसमें मॉडलिंग, सहयोग और कोचिंग, तथा ज्ञान, अभ्यास और पेशेवर भागीदारी विकसित करने वाली प्रक्रियाओं का उपयोग करना शामिल हो सकता है। शैक्षिक कार्यक्रमों के परिचालन विकास, प्रावधान और मूल्यांकन को सुनिश्चित करने के लिए प्रमुख शिक्षकों से उच्च स्तर की स्वतंत्रता के साथ शैक्षिक संस्थानों के भीतर एक महत्वपूर्ण क्षेत्र या कार्य को निर्देशित और प्रबंधित करने की अपेक्षा की जाती है। प्रमुख शिक्षकों से स्कूलों में शिक्षण और सीखने से संबंधित नीति विकास में महत्वपूर्ण योगदान देने की अपेक्षा की जाएगी। एक प्रमुख शिक्षक का शैक्षिक लक्ष्यों की प्राप्ति पर सीधा प्रभाव पड़ता है। वे रणनीतिक योजना में निहित एक या अधिक प्राथमिकताओं के कार्यान्वयन के लिए जिम्मेदार हैं (भूमिकाएं और जिम्मेदारियां शिक्षण सेवा, 2017)।

शिक्षकों को अत्यधिक कुशल कक्षा अभ्यासकर्ता होने की आवश्यकता है जो अपना अधिकांश समय कक्षा के भीतर उच्च गुणवत्ता वाले शिक्षण और सीखने में व्यतीत करते हैं और उनकी विशेषज्ञता से संबंधित कई जिम्मेदारियां हैं, जिनमें शिक्षण, अवलोकन और प्रदर्शन पाठ प्रदान करना शामिल है। अन्य शिक्षकों के लिए प्रतिक्रिया और स्कूल-आधारित व्यावसायिक शिक्षा की सुविधा प्रदान करना। शिक्षकों को उन विषय क्षेत्रों के संदर्भ से अच्छी तरह अवगत होना चाहिए जो वे छात्रों को पढ़ा रहे हैं। अनुभवी शिक्षकों के मार्गदर्शन में, शिक्षण पेशे में नौसिखिया शिक्षक एक या अधिक विषयों में छात्र समूहों की योजना बनाएंगे और पढ़ाएंगे और उनसे प्रेरण कार्यक्रमों और अन्य व्यावसायिक शिक्षण गतिविधियों में भाग लेने की उम्मीद की जाएगी, जो शैक्षणिक संस्थानों में पाठ्यक्रम, मूल्यांकन और शिक्षाशास्त्र के एकीकरण को सुनिश्चित करने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं (भूमिकाएं और जिम्मेदारियां शिक्षण सेवा, 2017)।

3. शिक्षकों की भूमिकाएँ :

शिक्षक वे होते हैं जो न केवल छात्रों को शैक्षणिक अवधारणाओं के संदर्भ में ज्ञान और जानकारी प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं बल्कि शिक्षा की समग्र प्रणाली को बढ़ाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हैरिसन, सी., एवं किलिअन, जे. (2006) द्वारा शिक्षकों की प्रमुख भूमिकाएँ इस प्रकार वर्णित हैं:

संसाधन प्रदाता - शिक्षक शैक्षिक संसाधन प्रदान करके अपने सहकर्मियों को सहायता प्रदान करते हैं। इनमें किताबें, लेख, नोट्स, वेबसाइट, दस्तावेज़ और अन्य शिक्षण सामग्री शामिल हैं। शैक्षणिक संस्थानों में, जब शिक्षकों की नई भर्ती की जाती है, तो उन्हें अपने कार्य कर्तव्यों को संतोषजनक ढंग से पूरा करने के संदर्भ में सहायता और समर्थन की आवश्यकता होती है। इसलिए, नए शिक्षकों की मदद करना अनुभवी शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिकाओं में से एक है। वे उन्हें संसाधन उपलब्ध कराते हैं और शैक्षणिक संस्थानों के विभिन्न पहलुओं के बारे में उनके बीच जानकारी उत्पन्न करते हैं। इस प्रकार, वे अपने कार्य कर्तव्यों को सुव्यवस्थित तरीके से करने और शैक्षिक लक्ष्यों और उद्देश्यों को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं।

पाठ्यचर्या विशेषज्ञ - पाठ्यक्रम विशेषज्ञ का काम सामग्री मानकों की समझ हासिल करना है। इसके अलावा, उन्हें इस बात की जानकारी होनी चाहिए कि विभिन्न घटक एक-दूसरे से कैसे संबंधित होंगे तथा निर्देश और मूल्यांकन की योजना बनाने में पाठ्यक्रम का उपयोग कैसे किया जाएगा। ये पाठ्यक्रम और शिक्षण विधियों के सुसंगत और सुसंबद्ध तरीके से कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक हैं। पाठ्यचर्या विशेषज्ञ शिक्षकों को मानकों और मानदंडों पर सहमत होने, अपनाई गई पाठ्यक्रम विधियों का पालन करने, सामान्य गति चार्ट का उपयोग करने और साझा मूल्यांकन विकसित करने में सक्षम बनाते हैं। पाठ्यक्रम का निर्माण करते समय, शिक्षकों को यह सुनिश्चित करना होगा कि यह शिक्षार्थियों के ग्रेड स्तर और क्षमताओं के अनुरूप हो।

निर्देशात्मक विशेषज्ञ - एक निर्देशात्मक विशेषज्ञ के रूप में, सहकर्मियों को शिक्षण रणनीतियों को उचित तरीके से लागू करने के संदर्भ में पर्याप्त जानकारी प्रदान की जाती है। शिक्षण-अधिगम विधियों को अच्छी तरह से तैयार करने की आवश्यकता है। इसके अलावा, उन्हें ग्रेड स्तर, शैक्षणिक अवधारणाओं और छात्रों की जरूरतों और आवश्यकताओं के अनुसार होना चाहिए। उदाहरण के लिए, जब शिक्षक छात्रों को संख्यात्मक समस्याएं पढ़ा रहे हैं, तो उन्हें लेखन विधियों का उपयोग करने की आवश्यकता है। संख्यात्मक समस्याओं की मौखिक व्याख्या छात्रों को पर्याप्त समझ प्रदान नहीं कर सकती है। इसलिए, निर्देशात्मक विशेषज्ञों को विभिन्न शैक्षणिक अवधारणाओं के लिए उपयुक्त तरीकों और दृष्टिकोणों के संदर्भ में कुशल ज्ञान रखने की आवश्यकता है। सहकर्मियों और वरिष्ठों से विचार और सुझाव प्राप्त करने से भी वांछित परिणाम प्राप्त करने में मदद मिलेगी। एक अनुदेशात्मक विशेषज्ञ सहकर्मियों को प्रभावी शिक्षण रणनीतियों को लागू करने में मदद करता है। इस समर्थन में साथी शिक्षकों के साथ साझेदारी में निर्देश को अलग

करने या पाठ की योजना बनाने के विचार शामिल हो सकते हैं। अनुदेशात्मक विशेषज्ञ अनुसंधान-आधारित कक्षा रणनीतियों का अध्ययन कर सकते हैं (मार्जानो, पिकरिंग, और पोलक, 2001); पता लगाएँ कि स्कूल के लिए कौन सी शिक्षण विधियाँ उपयुक्त हैं; और सहकर्मियों के साथ निष्कर्ष साझा करें।

उपदेशक – उपदेशक का कार्य व्यक्तियों को उनकी समस्याओं का समाधान प्रदान करने के संदर्भ में मार्गदर्शन और सलाह प्रदान करना, उन्हें अपने कार्यों और पाठ को सुव्यवस्थित तरीके से करने और व्यक्तिगत और व्यावसायिक लक्ष्यों को प्राप्त करने में सक्षम बनाना है। शिक्षकों को नवनीयुक्त शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के लिए मार्गदर्शक के रूप में कार्य करने की आवश्यकता है। जब शिक्षक एक संरक्षक के रूप में अपने कार्य कर्तव्यों का पालन करते हैं, तो वे न केवल दूसरों को पेशेवर लक्ष्य हासिल करने में मदद करते हैं, बल्कि व्यक्तिगत लक्ष्य भी हासिल करने में मदद करते हैं। जब शिक्षकों का स्वभाव मिलनसार और मैत्रीपूर्ण होता है, तो वे सहकर्मियों और छात्रों के साथ अनौपचारिक बातचीत में भी संलग्न रहते हैं। एक सलाहकार बनने के लिए बहुत अधिक समय और विशेषज्ञता की आवश्यकता होती है और यह एक नए पेशेवर के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

कक्षा समर्थक - शिक्षकों को कक्षा समर्थक माना जाता है। जब वे कक्षा समर्थकों के रूप में अपने कार्य कर्तव्यों का पालन कर रहे हैं, तो उन्हें यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि वे नवीन विचार और रणनीतियाँ विकसित करें। ये विचार और रणनीतियाँ पाठ योजनाओं, शिक्षण-अधिगम विधियाँ, शिक्षण-अधिगम सामग्री, गतिविधियों के संगठन, मूल्यांकन विधियों और छात्रों को समस्याओं से उबरने में मदद करना, विशेष रूप से वे समस्याएं जिनका सामना वांछित शैक्षणिक परिणाम उत्पन्न करने तथा लक्ष्यों एवं उद्देश्यों को प्राप्त करते समय किया जा सकता है। कक्षा समर्थकों के रूप में, यह सुनिश्चित करना शिक्षकों का कर्तव्य है कि छात्र सीखने के लिए प्रेरित महसूस करें और उन सभी सामग्रियों और सुविधाओं का प्रावधान होना चाहिए जो सीखने में सहायता कर सकें। ब्लेज़ और ब्लेज़ (2006) ने पाया कि साथियों के साथ परामर्श से शिक्षकों की आत्म-प्रभावकारिता (शिक्षकों का अपनी क्षमताओं और शिक्षण और सीखने की समस्याओं को सफलतापूर्वक हल करने की क्षमता में विश्वास) में वृद्धि हुई क्योंकि वे अभ्यास पर विचार करते थे और एक साथ बढ़ते थे, और इससे शिक्षकों की ओर से कार्रवाई (सहयोग के माध्यम से सुधार) के लिए एक पूर्वाग्रह को भी बढ़ावा मिलता था।

अधिगम सुविधाप्रदाता - शिक्षकों की एक अन्य भूमिका न केवल छात्रों के बीच, बल्कि स्टाफ सदस्यों के बीच भी पेशेवर सीखने के अवसरों को सुविधाजनक बनाना है। जब शिक्षकों को अधिगम सुविधाप्रदाता का कार्य सुव्यवस्थित तरीके से करना होता है, तो उनके लिए अपने सहकर्मियों के साथ-साथ प्रमुखों के साथ चर्चा बैठकों में भाग लेना महत्वपूर्ण होता है। सीखने की सुविधा के लिए, उन्हें पहलुओं तथा आधुनिक और नवीन तरीकों के संदर्भ में अच्छी तरह से सुसज्जित होने की आवश्यकता है। इसके अलावा, उन्हें खामियों और विसंगतियों की पहचान करने और सुधार लाने के लिए आवश्यक तरीकों को लागू करने की आवश्यकता है। सीखने की सुविधा के लिए, उन्हें विकल्पों का विश्लेषण करने और सुधार लाने की आवश्यकता है।

शोध और लेखन - यद्यपि शिक्षकों के पास बड़ी मात्रा में डेटा तक पहुंच है, तकनीकी और इंटरनेट के व्यापक उपयोग ने उन्हें विभिन्न विषयों के संदर्भ में डेटा एकत्र करने में सक्षम बनाया है। उच्च शिक्षण संस्थानों में शोध और लेखन को शिक्षकों के साथ-साथ छात्रों के कार्य कर्तव्यों का एक अभिन्न अंग माना जाता है। शिक्षक, जो स्नातक, परास्नातक या डॉक्टरेट स्तर पर छात्रों को पढ़ा रहे हैं, उन्हें बड़े पैमाने पर शोध और लेखन कार्य पूरा करना आवश्यक है। वे लेख, शोध पत्र और किताबें लिखते हैं। वे आम तौर पर प्रकाशन उद्देश्यों के लिए अपना काम पत्रिकाओं में भेजते हैं या इंटरनेट पर अपलोड करते हैं। इस तरह, वे अपने लेखन कौशल को निखार रहे हैं, ज्ञान प्राप्त कर रहे हैं और दूसरों के बीच जानकारी का प्रसार कर रहे हैं।

शिक्षार्थी - शिक्षकों को भी शिक्षार्थी माना जाता है। ऐसा इसलिए है, क्योंकि अपने कार्य कर्तव्यों के दौरान, उन्हें अपने ज्ञान और दक्षताओं को बढ़ाने तथा आधुनिक और नवीन तरीकों के उपयोग के संदर्भ में जागरूकता पैदा करने की आवश्यकता होती है। दूसरे शब्दों में, उन्हें कई पहलुओं को सीखने की जरूरत है। अनुसंधान ने संकेत दिया है कि कुछ मामलों में, शिक्षक मोबाइल तकनीकी या यहां तक कि कंप्यूटर के उपयोग से भी अच्छी तरह वाकिफ नहीं हैं। इसलिए, ज्ञान प्राप्त करने के लिए वे कंप्यूटर प्रशिक्षण केंद्रों में दाखिला लेते हैं और अपनी दक्षताओं को बढ़ाते हैं। इसके अलावा, उन्हें गहन अभ्यास में जुटने की आवश्यकता है। इस तरह, वे तकनीकी के उपयोग से अच्छी तरह सुसज्जित हो सकते हैं। तकनीकी तथा आधुनिक और नवीन तरीकों के अलावा, शिक्षकों को संचार, आलोचनात्मक सोच, निर्णय लेने और संघर्ष समाधान के संदर्भ में अपने कौशल विकसित करने की आवश्यकता है। कौशल और क्षमताओं को निखारने से वे अपने कार्य कर्तव्यों को व्यवस्थित तरीके से करने और नौकरी से संतुष्टि प्राप्त करने में सक्षम होंगे।

विद्यालय नेता - विद्यालय नेता होने का अर्थ है किसी समिति में सेवा करना, जैसे कि स्कूल सुधार टीम, ग्रेड-स्तर या विभाग के अध्यक्ष के रूप में कार्य करना, स्कूल की पहल का समर्थन करना, या समुदाय या जिला टास्क फोर्स या समितियों में स्कूल का प्रतिनिधित्व करना। एक विद्यालय नेता विद्यालय के दृष्टिकोण को साझा करता है। शैक्षणिक लक्ष्यों की प्राप्ति के अलावा, यह स्कूल नेताओं का काम है कि वे छात्रों के कार्यों और गतिविधियों को इस तरह से मार्गदर्शन और निर्देशित करें जो शिक्षा की समग्र प्रणाली को समृद्ध करने में योगदान दे। स्कूल नेता अपने व्यावसायिक लक्ष्यों को स्कूल के लक्ष्यों के साथ जोड़ते हैं और समग्र रूप से स्कूल की सफलता के लिए जिम्मेदारी साझा करते हैं।

परिवर्तन के उत्प्रेरक - शिक्षक परिवर्तन लाने के उत्प्रेरक हैं। दूरदर्शी लोग, जो पारंपरिक तरीकों से संतुष्ट नहीं हैं और आधुनिक तरीकों की तलाश में हैं, उन्हें बदलाव लाने की जरूरत है। शिक्षक नेता भी परिवर्तन के उत्प्रेरक, दूरदर्शी हो सकते हैं जो "कभी भी यथास्थिति से संतुष्ट नहीं होते बल्कि हमेशा बेहतर रास्ते की तलाश में रहते हैं" (लार्नर, एम. 2004)। कक्षा की स्थिति और समग्र शैक्षणिक संस्थानों में, शिक्षक परिवर्तन लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जिन महत्वपूर्ण पहलुओं के संदर्भ में कक्षा की सेटिंग में बदलाव लाए जाते हैं, वे हैं, शिक्षण-अधिगम विधियाँ, निर्देशात्मक रणनीतियाँ, शिक्षण-अधिगम सामग्री, प्रौद्योगिकियाँ, फर्नीचर और उपकरण। दूसरी ओर, शैक्षणिक संस्थानों में तकनीकीयों, बुनियादी ढांचे, नागरिक सुविधाओं, प्रयोगशालाओं, कक्षाओं की संख्या और समग्र पर्यावरणीय स्थितियों के संदर्भ में परिवर्तन लाए जाते हैं। परिवर्तन लाने के लिए शिक्षकों और शैक्षणिक संस्थानों के अन्य सदस्यों को एक-दूसरे के साथ सहयोग और एकीकरण में काम करने की आवश्यकता है।

4. शिक्षकों की जिम्मेदारियाँ :

शिक्षकों की जिम्मेदारियों पर प्रकाश डालने वाले विभिन्न पहलुओं को इस प्रकार समझाया गया है:

प्रबंधकीय कार्य - शिक्षकों को योजना, आयोजन, नेतृत्व, समन्वय और नियंत्रण जैसे प्रबंधकीय कार्य करने की आवश्यकता होती है। इन कार्यों को कक्षाओं के साथ-साथ शैक्षणिक संस्थानों में भी लागू करने की आवश्यकता है। कक्षाओं में, इन कार्यों का कार्यान्वयन शिक्षण-अधिगम विधियाँ, निर्देशात्मक रणनीतियाँ, छात्र सीखने, शिक्षण-अधिगम सामग्री, तकनीकीयों, उपकरण, अनुशासन और समग्र वातावरण के संबंध में होता है। दूसरी ओर, इन कार्यों को शिक्षा की समग्र प्रणाली के कामकाज में उचित रूप से लागू करने की भी आवश्यकता है। ज्यादातर मामलों में, प्रमुख और प्रिंसिपल वे होते हैं जिनके पास कार्यों और संचालन पर नियंत्रण और निर्णय लेने का अधिकार निहित होता है। शिक्षण संस्थानों के समग्र कामकाज से संबंधित महत्वपूर्ण निर्णय लेने में, वे शिक्षकों से विचार और सुझाव लेते हैं। इसलिए, शिक्षक प्रबंधकीय कार्यों के कार्यान्वयन में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। वे शैक्षिक वृद्धि और विकास के लिए मानव और भौतिक संसाधनों के प्रबंधन और संगठन में योगदान देते हैं।

छात्र प्रबंधन - छात्र प्रबंधन एक ऐसा पहलू है जो अत्यंत महत्वपूर्ण है जिस पर शिक्षकों को ध्यान देने की आवश्यकता है। शिक्षकों का एक प्रमुख उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि उनके बीच सुव्यवस्थित तरीके से सीखना हो। इस कार्य के कार्यान्वयन में, ऐसे कई पहलू हैं जिन पर ध्यान देने की आवश्यकता है, इनमें शैक्षणिक अवधारणाओं के संदर्भ में उन्हें पर्याप्त ज्ञान प्रदान करना, उनके कौशल को बढ़ाने के लिए उन्हें कार्यभार और कार्य अभ्यास देना, उचित प्रदर्शन मूल्यांकन विधियों को लागू करना शामिल है, उनकी समस्याओं को सुनना और समाधान प्रदान करना, यह सुनिश्चित करना कि वे अनुशासित हों, मार्गदर्शन प्रदान करें और उनमें नैतिकता, परिश्रम और कर्तव्यनिष्ठा के गुण विकसित करें। ये पहलू उन्हें देश के प्रभावी नागरिक बनने में सक्षम बनाएंगे। जब शिक्षक छात्र प्रबंधन के कार्य को उचित रूप से करने में सक्षम होते हैं। वे पेशेवर लक्ष्यों को प्राप्त करने और नौकरी से संतुष्टि प्राप्त करने में सक्षम हैं।

परामर्श और निर्देशन - सभी स्तरों पर शैक्षणिक संस्थानों में, छात्र आमतौर पर कई पहलुओं के संबंध में समस्याओं और चुनौतियों का अनुभव करते हैं। इनमें शैक्षणिक अवधारणाओं को समझने में समस्याएँ, घरेलू पर्यावरणीय परिस्थितियाँ, वित्तीय समस्याएँ, पारिवारिक मुद्दे और मनोवैज्ञानिक समस्याएँ शामिल हैं। ये समस्याएँ शैक्षिक लक्ष्यों को प्राप्त करने में बाधक सिद्ध होती हैं। इसलिए उनके लिए इन समस्याओं का समाधान तैयार करना आवश्यक है। इन समस्याओं का समाधान प्रदान करने के लिए, वे आमतौर पर शिक्षकों से परामर्श और निर्देशन लेते हैं या पेशेवर परामर्शदाताओं से मदद लेने के लिए परामर्श केंद्रों से जुड़ते हैं। शैक्षणिक संस्थानों में परामर्श केंद्र होते हैं, जो विभिन्न क्षेत्रों में व्यक्तियों को परामर्श और निर्देशन प्रदान करते हैं। इनमें उनकी सीखने की अक्षमताओं, मनोवैज्ञानिक समस्याओं का समाधान प्रदान करना, कैरियर परामर्श प्रदान करना, रोजगार के अवसरों के बारे में निर्देशन प्रदान करना, वित्तीय समस्याओं का समाधान प्रदान करना आदि शामिल हैं। विभिन्न प्रकार की समस्याओं का उचित तरीके से समाधान प्रदान करने के लिए विकल्पों का विश्लेषण करना और सबसे उपयुक्त विकल्पों का चयन करना महत्वपूर्ण है।

शैक्षणिक प्रबंधन - शैक्षिक प्रबंधन में, कई कारक हैं जिन पर विचार करने की आवश्यकता है। ये हैं, शिक्षण-अधिगम विधियाँ, पाठ्यक्रम और निर्देश प्रणाली, मूल्यांकन विधियाँ, गतिविधियों और प्रतियोगिताओं का संगठन, परीक्षाओं का संचालन, शिक्षा की समग्र प्रणाली की प्रगति के लिए नीतियों और प्रक्रियाओं का निर्माण तथा आधुनिक, वैज्ञानिक और नवीन विधियाँ के उपयोग को प्रोत्साहित करना। शिक्षण प्रदान करने में, सह-पाठ्यचर्या संबंधी गतिविधियों का आयोजन करना, पाठ्यचर्या संबंधी लेन-देन करना, परीक्षाओं की प्रकृति के संदर्भ में निर्णय लेना और छात्रों के लिए पदोन्नति मानदंडों को बढ़ावा देना। सभी शैक्षिक प्रबंधन कार्यों को संतोषजनक ढंग से पूरा करने के लिए शिक्षकों के पास आवश्यक शैक्षणिक योग्यता और दक्षता का होना ज़रूरी है। उन्हें नियमित आधार पर अनुसंधान करने की आवश्यकता है जो उन्हें सीमाओं के संदर्भ में जागरूकता पैदा करने में सक्षम बनाएगा। इसके अलावा, उन्हें यह सुनिश्चित करने की ज़रूरत है कि संचालन में अपनाई गई विधियाँ और दृष्टिकोण शैक्षणिक संस्थानों के सभी सदस्यों के लिए फायदेमंद साबित हों।

प्रदर्शन मूल्यांकन - शिक्षकों द्वारा छात्रों को पाठ योजनाओं के संदर्भ में ज्ञान प्रदान करने के बाद, दूसरा कदम यह पता लगाना है कि उन्होंने कितना सीखा है और क्या शिक्षण-अधिगम विधियाँ उनके लिए फायदेमंद साबित हुए हैं। इसलिए, प्रदर्शन मूल्यांकन उन विधियों और रणनीतियों के कार्यान्वयन को संदर्भित करता है जिनका उपयोग छात्रों के प्रदर्शन का मूल्यांकन करने के लिए किया जाता है। सभी स्तरों पर शैक्षणिक संस्थानों में, सबसे अधिक इस्तेमाल की जाने वाली प्रदर्शन मूल्यांकन विधियाँ परीक्षण, असाइनमेंट, प्रस्तुतियाँ, प्रतियोगिताओं और अन्य गतिविधियों का संगठन हैं। जब छात्र इन विधियों में अच्छा प्रदर्शन करते हैं, तो शिक्षकों का मानना है कि उन्होंने सीखने-सिखाने के तरीकों को संतोषजनक ढंग से लागू किया है और उनके बीच अवधारणाओं की समझ को सुविधाजनक बनाने में प्रभावी ढंग से योगदान दे रहे हैं। दूसरी ओर, जब छात्र अपने शैक्षणिक प्रदर्शन में असफलताओं का अनुभव करते हैं, तो शिक्षक न केवल उन्हें कड़ी मेहनत करने और अपनी पढ़ाई पर ध्यान केंद्रित करने की सलाह देते हैं, बल्कि उनके शिक्षण-सीखने के तरीकों में भी सुधार करते हैं।

कार्मिक प्रबंधन - कार्मिक प्रबंधन से तात्पर्य मानव संसाधनों की योजना और प्रबंधन से है। इस मामले में जिन मुख्य कार्यों को ध्यान में रखने की आवश्यकता है वे हैं, भर्ती, स्थानांतरण और पुनर्नियोजन, पदोन्नति के अवसर, प्रदर्शन मूल्यांकन प्रणाली, शिकायत निवारण तंत्र और पेशेवर विकास के मुद्दे। आमतौर पर शिक्षकों को मुख्य रूप से छात्रों से संबंधित कार्मिक प्रबंधन को बढ़ावा देने का अधिकार दिया जाता है। अवसर उत्पन्न करने की ज़रूरत है और शिक्षण-अधिगम विधियों को इस तरह से व्यवस्थित करने की ज़रूरत है कि छात्र शैक्षिक लक्ष्यों को प्राप्त करने में सक्षम हो सकें। विद्यार्थी आमतौर पर शिक्षा प्राप्त करते समय विभिन्न प्रकार की समस्याओं और चुनौतियों का अनुभव करते हैं। इसलिए, शिक्षकों के लिए कार्यप्रणाली, विधियों और दृष्टिकोणों को लागू करना और शिक्षा प्रणाली को इस तरह से डिजाइन करना महत्वपूर्ण है जो उन्हें सीखने के प्रति प्रेरणा विकसित करने और व्यावसायिकता बढ़ाने में सक्षम बनाए।

कार्रवाई करना - कार्रवाई करना शिक्षकों के कार्य कर्तव्यों का एक अभिन्न अंग है। शैक्षणिक संस्थानों, विशेषकर कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में, शिक्षकों के लिए यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि वे छात्रों को सुव्यवस्थित तरीके से शैक्षिक कौशल प्रदान करने में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। इस उद्देश्य के अलावा, उन्हें अन्य क्षेत्रों के संदर्भ में भी कार्रवाई करने की आवश्यकता है। इनमें कार्यशालाओं और सेमिनारों का आयोजन करना, बैठकों में भाग लेना, नीतियों और प्रक्रियाओं पर काम करना और कार्यों और गतिविधियों के कार्यान्वयन में आधुनिक और नवीन तरीकों की शुरुआत करना शामिल है। जब शिक्षक कार्रवाई कर रहे हैं, तो उन्हें एक-दूसरे के साथ समन्वय और एकीकरण में काम करने की आवश्यकता है। अलगाव में काम करने से वांछित परिणाम नहीं मिलेंगे। इसके अलावा, जब उन्होंने कार्रवाई की है, तो उन्हें यह सुनिश्चित करना होगा कि वे शैक्षणिक संस्थान और उसके सदस्यों के लिए फायदेमंद और सार्थक साबित हों।

नेतृत्व कौशल का विकास - शिक्षकों को छात्रों में नेतृत्व कौशल के विकास में प्रभावी ढंग से योगदान देने की आवश्यकता है। इन कौशलों को विभिन्न अवसरों के प्रावधान द्वारा बढ़ाया जा सकता है। उदाहरण के लिए, शिक्षक कुछ छात्रों को निगरानी और पर्यवेक्षण की जिम्मेदारियाँ सौंपते हैं। विशेष रूप से शिक्षकों की अनुपस्थिति में, उन्हें यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि अनुशासन बनाए रखा जाए। कुछ मामलों में, शिक्षक उन्हें अपनी अनुपस्थिति में शिक्षण-अधिगम विधियों और निर्देशात्मक रणनीतियों को लागू करने की अनुमति भी देते हैं। आमतौर पर छात्र शिक्षकों की अनुपस्थिति में किसी अन्य काम में व्यस्त हो जाते हैं या अपने काम पर ध्यान नहीं देते हैं। इसलिए, जब छात्रों को नेतृत्व कौशल विकसित करने के संदर्भ में प्रशिक्षित किया जाता है, तो उन्हें यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता होती है कि अनुशासन बनाए रखा जाए। नेताओं का अभिन्न कार्य दूसरों का पर्याप्त मार्गदर्शन करना और नेतृत्व करना है। इसलिए, जब छात्र नेतृत्व कौशल लागू कर रहे हैं, तो उन्हें यह सुनिश्चित करने की ज़रूरत है कि वे दूसरों का मार्गदर्शन करें और उन्हें सही दिशा में ले जाएं और समस्याओं और चुनौतियों से निपटने में उनकी मदद करें। नेतृत्व कौशल का विकास व्यक्तिगत और व्यावसायिक लक्ष्यों को प्राप्त करने में सार्थक है।

शिक्षा में तकनीकी का उपयोग - वर्तमान अस्तित्व में, तकनीकी के उपयोग ने न केवल शैक्षणिक संस्थानों में बल्कि अन्य क्षेत्रों में भी गति पकड़ी है। व्यक्ति अपने कार्यों और गतिविधियों को पूरा करने के लिए तकनीकी का उपयोग कर रहे हैं। शिक्षा के क्षेत्र में, व्यक्ति छात्रों के बीच शैक्षणिक अवधारणाओं को सीखने और समझने के लिए तकनीकी का उपयोग कर रहे हैं। छात्र असाइनमेंट, रिपोर्ट और प्रोजेक्ट तैयार करने के लिए भी तकनीकी का भरपूर उपयोग कर रहे हैं। जब व्यक्तियों को विभिन्न पहलुओं के संबंध में जानकारी प्राप्त करने की आवश्यकता होती है, तो वे इंटरनेट का उपयोग करते हैं। अनुसंधान ने संकेत दिया है कि व्यक्ति बचपन से ही तकनीकी और कंप्यूटर का उपयोग करना सीखना शुरू कर देते हैं। जैसे-जैसे वे बड़े होते हैं और माध्यमिक विद्यालयों, वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों और उच्च शिक्षण संस्थानों में दाखिला लेते हैं, उनमें दक्षता और विशेषज्ञता विकसित होती है। तकनीकी के उपयोग ने व्यक्तियों को अपने कार्यों और गतिविधियों को अधिक प्रबंधनीय तरीके से पूरा करने और वांछित परिणाम उत्पन्न करने में सक्षम बनाया है।

अनुशासन को बढ़ावा देना - शिक्षकों के लिए यह महत्वपूर्ण है कि वे छात्रों को कक्षा की परिस्थिति में अनुशासित रहने के बारे में प्रशिक्षण और जानकारी प्रदान करें। अनुशासन को बढ़ावा देने के लिए शिक्षकों द्वारा उपयोग की जाने वाली सबसे सरल रणनीतियों में से एक विनम्र और सभ्य तरीके से संवाद करना और आलोचना से अधिक प्रशंसा का उपयोग करना है (शिक्षकों और कक्षा प्रबंधन की भूमिका, 2009)। जब छात्र अच्छा प्रदर्शन करते हैं, तो उनके शिक्षकों द्वारा उनकी सराहना की जानी चाहिए। दूसरी ओर, असफलताओं का अनुभव होने पर उन्हें रचनात्मक प्रतिक्रिया दी जानी चाहिए। छात्रों के बीच अनुशासन को बढ़ावा देने के लिए सबसे पहला और सबसे महत्वपूर्ण कदम छात्रों के साथ शांत और संयमित तरीके से संवाद करना है। उनमें जागरूकता पैदा की जानी चाहिए कि उन्हें व्यवस्था बनाए रखने और अपने काम के प्रति पूरे मन से ध्यान केंद्रित करने की जरूरत है। दूसरी ओर, जब छात्र अनुशासनहीन होते हैं और अपने शिक्षक जो कह रहे हैं उसे नहीं सुनते हैं, तो दंड लगाया जाता है। शैक्षणिक संस्थान ऐसे उपाय और नीतियां बनाते हैं जो अनुशासन को बढ़ावा देने में प्रभावी ढंग से योगदान करते हैं।

संचार कौशल का विकास - व्यक्ति के जीवन के सभी क्षेत्रों में संचार कौशल का अत्यधिक महत्व माना जाता है। चाहे कोई शैक्षणिक संस्थानों में नामांकित हो, या रोजगार के अवसरों में लगा हो या सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक गतिविधियों में भाग ले रहा हो, या परिवार के सदस्यों, दोस्तों या समुदाय के सदस्यों के साथ अच्छे संबंध और संबंध बनाए रख रहा हो, व्यक्तियों के लिए अपने संचार कौशल को बेहतर बनाना आवश्यक है। संचार कौशल को संचार की प्रक्रियाओं के संदर्भ में सैद्धांतिक ज्ञान प्राप्त करके निखारा जा सकता है, जिसमें बोलना, सुनना, प्रतिक्रिया देना और जवाब देना शामिल है और व्यक्ति को दूसरों के साथ संचार में संलग्न होने की आवश्यकता होती है। कोई भी व्यक्ति दूसरों के साथ फोन पर मौखिक रूप से या आमने-सामने या संदेश, पत्र, ईमेल आदि के माध्यम से लिखित रूप से संवाद कर सकता है। दूसरों के साथ संचार कौशल का विकास व्यक्तियों के जीवन की समग्र गुणवत्ता को समृद्ध करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शैक्षणिक संस्थानों में, शिक्षक समूह चर्चाओं, भाषणों, प्रस्तुतियों और बहसों में भागीदारी को प्रोत्साहित करके संचार कौशल को निखारने में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

समान अधिकार और अवसर प्रदान करना - शैक्षिक लक्ष्यों और उद्देश्यों को प्राप्त करने और शिक्षा की समग्र प्रणाली को समृद्ध करने के लिए, शिक्षकों के लिए अनुशासन को बढ़ावा देना महत्वपूर्ण है। अनुसंधान ने संकेत दिया है कि शैक्षणिक संस्थानों में सभी स्तरों पर विभिन्न प्रकार के आपराधिक और हिंसक कृत्य होते हैं, जो न केवल शिक्षा की प्राप्ति में बाधा डालते हैं, बल्कि शैक्षिक लक्ष्यों और उद्देश्यों की प्राप्ति में बड़ी बाधा हैं। इस प्रकार, शैक्षणिक संस्थानों में, कानून और नीतियां बनाई जाती हैं जो सभी के लिए समान अधिकारों और अवसरों के प्रावधान और सभी व्यक्तियों के साथ सम्मान और शिष्टाचार के साथ व्यवहार करने पर जोर देती हैं। सह-शिक्षा में शिक्षकों के लिए यह दृष्टिकोण रखना महत्वपूर्ण है कि लड़कियों के साथ भेदभाव नहीं किया जाना चाहिए और उन्हें विभिन्न कार्यों और गतिविधियों में भाग लेने के समान अवसर प्रदान किए जाने चाहिए। जब शैक्षणिक संस्थानों के सभी सदस्यों के साथ समान व्यवहार किया जाता है, तो शिक्षा प्रणाली के संवर्धन को बढ़ावा देना महत्वपूर्ण है।

5. निष्कर्ष :

व्यक्तियों के बीच शैक्षणिक शिक्षा को बढ़ावा देने, उन्हें नैतिकता, नीति, परिश्रम, संसाधनशीलता और कर्तव्यनिष्ठा के गुणों को विकसित करने, सामुदायिक कल्याण को बढ़ावा देने और व्यक्तियों के प्रभावी विकास को बढ़ावा देने में शिक्षकों की भूमिकाएं और जिम्मेदारियां महत्वपूर्ण मानी जाती हैं, ताकि वे प्रदान कर सकें। स्वयं के लिए बेहतर आजीविका को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण योगदान। अपनी भूमिका एवं उत्तरदायित्व को सही ढंग से निभाने के लिए शिक्षकों को अपनी दक्षता एवं शैक्षणिक योग्यता में वृद्धि करना आवश्यक है। उन्हें यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि वे अपने कार्य कर्तव्यों को सुव्यवस्थित तरीके से करने के लिए आवश्यक आधुनिक और नवीन तरीकों के बारे में जागरूकता पैदा करें। शिक्षकों की भूमिकाओं और जिम्मेदारियों में अंतर है। शिक्षकों की प्रमुख भूमिकाएं संसाधन प्रदाता, अनुदेशात्मक विशेषज्ञ, पाठ्यक्रम विशेषज्ञ, कक्षा समर्थक, शिक्षण सुविधाप्रदाता,

उपदेशक, स्कूल नेता, शोध और लेखन, परिवर्तन के उत्प्रेरक और शिक्षार्थी हैं। ये भूमिकाएँ शिक्षकों को अपनी नौकरी के दौरान निभानी चाहिए।

विभिन्न पहलू, जो शिक्षकों की जिम्मेदारियों को उजागर करते हैं, वे हैं, प्रबंधकीय कार्य, कार्मिक प्रबंधन, छात्र प्रबंधन, शैक्षणिक प्रबंधन, प्रदर्शन मूल्यांकन, कार्रवाई करना, परामर्श और मार्गदर्शन, शिक्षा में तकनीकी का उपयोग, नेतृत्व कौशल का विकास, संचार कौशल का विकास, समान अधिकार एवं अवसर प्रदान करना तथा अनुशासन को बढ़ावा देना। शिक्षकों की भूमिकाएँ और जिम्मेदारियाँ न केवल छात्रों, बल्कि शैक्षणिक संस्थानों के सभी सदस्यों की भलाई को बढ़ावा देने से संबंधित हैं। अपनी भूमिकाएँ और जिम्मेदारियाँ निभाते समय उन्हें रचनात्मक दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है। शिक्षण कार्य कठिन है और शिक्षकों को अपने कार्य कर्तव्यों के कार्यान्वयन के दौरान कई चुनौतियों से गुजरना पड़ता है। लेकिन उनके लिए रचनात्मक दृष्टिकोण रखना, उन क्षेत्रों के संदर्भ में विश्लेषण करना, जिनमें सुधार की आवश्यकता है, कठिनाइयों और समस्याओं का उचित रूप से सामना करना सीखना और अपने कार्य कर्तव्यों के कार्यान्वयन के प्रति रुचि और उत्साह विकसित करना महत्वपूर्ण है। इसलिए, ये कारक उन्हें व्यवस्थित तरीके से अपनी भूमिका और जिम्मेदारियाँ निभाने और नौकरी से संतुष्टि प्राप्त करने में सक्षम बनाएंगे।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. Blase, J., & Blase, J. (2006). Teachers bringing out the best in teachers: A guide to peer consultation for administrators and teachers. Thousand Oaks, CA: Corwin Press.
2. Child and Emphasis on Teacher Skill Development, Knowledge Building and ICT. Retrieved October 07, 2019 from http://dhsekerala.gov.in/downloads/role_tech.pdf
3. Harrison, C., & Killion, J. (2006). Ten New Roles for Teachers and School-Based Coaches, Oxford, OH: National Staff Development Council.
4. Larner, M. (2004). Pathways: Charting a course for professional learning. Portsmouth, NH: Heinemann.
5. Marzano, R., Pickering, D., & Pollock, J. (2001). Classroom instruction that works. Alexandria, VA: ASCD.
6. Pushkar, P. (2015). Role of Teacher in Higher Education. International Journal of Education and Information Studies, 5(1), 25-30.
7. Ranjan, N., & Rahman, N. (n.d.). Role of Teacher in Enhancing Learning Achievement of Child and Emphasis on Teacher Skill Development, Knowledge Building and ICT. Retrieved October 07, 2019 from http://dhsekerala.gov.in/downloads/role_tech.pdf
8. Roles and Responsibilities Teaching Service. (2017). Education and Training. Retrieved October 08, 2019 from https://www.education.vic.gov.au/hrweb/Documents/Roles_and_responsibilities-TS.pdf
9. The Role of Teacher and Classroom Management. (2009). Retrieved October 08, 2019 from <http://www.scientificlanguage.com/esp/classroom-management.pdf>